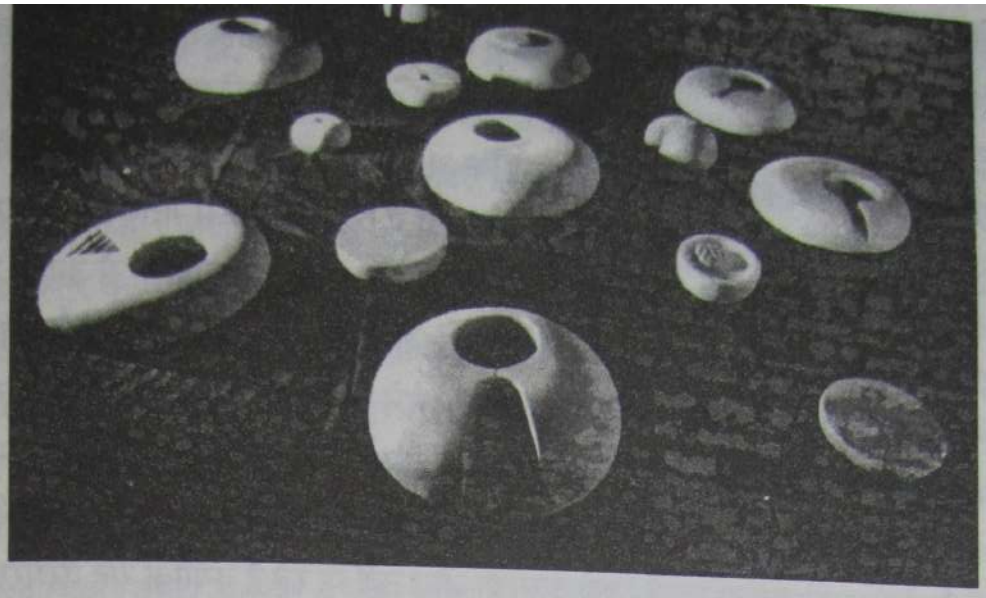

अमरेश कुमार

विनय कुमार

अमरेश कुमार : विस्तार से विन्दु की यात्रा

आंतरिक वस्तु यानी त्रिविमीय विचार को मूर्त रूप देना ही किसी कलाकृति का सृजन है। यह आंतरिक वस्तु क्या है? त्रिविमीय विचार क्या हैं? ये परंपरा और प्रयोग से कितने निर्देशित होते हैं? ये आस्था और अनास्था के कितने करीब और कितने विरोधी हैं? जब एम रामचंद्रन त्रिविमीय विचार की बात करते हैं तो वहां कला और कलाकार के अतिरिक्त भी कुछ मौजूद होता है जो कभी-कभी चेतन से और अक्सर अवचेतन से निर्देशित होता है। यही कारण है कि

देश के युवा मूर्तिकार अमरेश कुमार के मूर्तिशिल्प – *चाय दुकान, बैंड पार्टी, घर-परिवार* और *घरौंदा* से ध्यान, एकान्त और गर्भगृह की यात्रा महज एक संयोग नहीं है और न ही अवचेतन में घट रही कोई घटना बल्कि यह एक यात्रा है। यह यात्रा परंपरा के सान्निध्य में गतिमान है। वरिष्ठ शिल्पकार पी चन्द्रविनोद अकारण नहीं कहते कि आज अमरेश को उनके मूर्तिशिल्प में विस्तार (मूर्त) से विन्दु (अमूर्त) की ओर बढ़ते हुए देख रहा हूं। यह यात्रा उस गंतव्य के लिए है, जहां शून्य है, जहां सब कुछ स्थिर हो जाता है। जहां मानव की कष्टसाध्य प्रक्रिया से उपजी शांति है। जहां कला और कलाकार एक हो जाते हैं, पर जहां दुनिया से विरक्ति नहीं है। यह कला, कलाकार और समाज के अंतर्संबंधों को विकसित करने की दिशा में प्रस्थान-विन्दु है। यही विन्दु अमरेश की कला का केन्द्र है, जो उन वृत्तों का केन्द्र है जो गोलाकार और अधिक आयतन वाले पत्थरों से अमरेश के द्वारा सृजित होते हैं, जो केन्द्र है उन वृत्तों का, जिनके ऊपर और भीतर रची जाती है दुनिया। यह वह दुनिया है जिसे अमरेश छोड़ नहीं पा रहे हैं क्योंकि यह परंपरा की बात है और परंपरा से जातीय गरिमा और अस्मिता के प्रश्न जुड़े होते हैं।

हमारे समय के महत्वपूर्ण शिल्पकार अमरेश के यहां न केवल दृष्टि का विस्तार है बल्कि माध्यमों का भी विस्तार है। वे ब्रेख्त के इस विचार से इत्तेफाक रखते हैं कि जीवन बदलता रहता है, उसे चित्रित करने के लिए जरूरी है कि हम चित्रण के माध्यम भी बदलते रहें। अमरेश ने अब तक टेराकोटा, कांस्य, मिक्स मीडिया, फाइबर ग्लास, प्रस्तर आदि माध्यमों में सृजन किया है। पर अमरेश को अब प्रस्तर माध्यम ज्यादा पसंद है। यद्यपि टेराकोटा में भी अमरेश ने खूब काम किया है। इसमें उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति भी मिली है, अपनी शैली को हासिल भी किया है, पर टेराकोटा में सृजन अवधि अत्यंत छोटी होती है। अमरेश मानते हैं कि प्रस्तर में एक आकृति का अवतरण धीरे-धीरे होता है। अत: कलात्मक अहसास भी धीरे-धीरे होता है और क्रमश: बढ़ता जाता है।

पटना विश्वविद्यालय से कला स्नातक, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से मास्टर डिग्री और वर्तमान में पटना एवं शिल्प महाविद्यालय में मूर्तिशिल्प विभाग में व्याख्याता अमरेश विगत कुछ वर्षों से चुनार के बलुआ पत्थरों से सृजन-कार्य कर रहे हैं। उनके इन प्रस्तर शिल्पों पर बनारस का काफी प्रभाव है। बनारस में गंगा के घाट की सीढ़ियां, मन्दिरों की सीढ़ियां और गर्भगृह, वहां के परिवेश का एकान्त, सभी उनके मूर्तिशिल्पों में मौजूद हैं।

अमरेश अपने समय के एक महत्वपूर्ण शिल्पकार इसलिए भी हो जाते हैं, क्योंकि वे उन थोड़े से शिल्पकारों में एक हैं, जो पत्थरों को भीतर से तराशते हैं। भीतर से तराशे गए शिल्पों में *गर्भगृह* शृंखला महत्वपूर्ण है। इन बलुआ पत्थरों में उन्होंने एक और महत्वपूर्ण प्रयोग किया है, वह है चमकदार पालिश का उपयोग। इनके पालिश को देखते ही मौर्यकालीन मूर्तिशिल्प खासकर दीदारगंज की चंवरधारिणी यक्षिणी और बौद्ध-स्तंभों आदि की याद सहसा स्मृति-पटल पर आ जाती है।

जलकुंड शृंखला में अमरेश ने प्रस्तरों को जोड़कर सृजन किया है। इस शृंखला का सौंदर्य उनकी चमक में तो है ही, साथ ही जलकुंड में भी है, जो सहसा गांव की ताल-तलैया को प्रतीकात्मक रूप में रखता है, तो बनारस के घाटों और घाटों की सीढ़ियों को भी रखता है। इसमें १० से १५ इंच की त्रिज्या वाले आयताकार प्रस्तरों को भव्यता प्रदान करती हैं एक इंच की छोटी मानवाकृतियां। चाक्षुष कलाओं का सौंदर्य, कोई अमूर्त सौंदर्य नहीं होता। जलकुंड शृंखला की कुछ प्रस्तर कृतियों के ऊपर अमरेश ने जो दुनिया रची है वह मानवविहीन है। मानव है, पर नीचे जलकुण्ड में। यह प्रस्थान नहीं है, प्रकृति की निकटता का प्रयास है। ऊपर का शहर निर्जन और वीरान है, मानो हड़प्पा की सभ्यता के किसी शहर का पुरातात्विक साक्ष्य हो। पूर्व में लिखा गया कि यह प्रस्थान नहीं है। यहां विद्रोह है वर्तमान परिवेश से। तलाश है एकान्त की, शान्ति की, जिसकी प्रतीक्षा में मानव खड़ा है ताल-तलैया के निर्मल-ठण्डे जल में। इन ताल-तलैयों को एक नया सौंदर्यात्मक स्वरूप अमरेश ने प्रदान किया है, इसलिए *जलकुंड* शृंखला काफी महत्वपूर्ण है।

अमरेश की दूसरी महत्वपूर्ण शृंखला *गर्भगृह* है। गुम्बद, पत्थरों में समा गए दृश्य चित्र, सपाट भूमि पर बने उतार-चढ़ाव, ताल-तलैया, घाट की सीपियां, जो जल की गहराइयों में उतर गई हैं। डेढ़ फीट का पाषाण मानो आकाश छूना चाहता है। वहीं गर्भगृह में शान्ति है, एकदम शान्ति। पत्थरों में खुरदरे और पालिश की चिकनाहट का एक साथ अहसास। यह एक नया चाक्षुष अनुभव है जो अमरेश सभी को बांटना चाहते हैं। यह गर्भगृह अमरेश के त्रिविमीय विचार हैं, जिन्हें प्रस्तर का आकार मिला है।

झारखंड राज्य के बोकारो स्टील सिटी में पले-बढ़े अमरेश मूलत: बिहार के संपन्न सांस्कृतिक परिवेश वाले भोजपुर जिला के रहने वाले हैं। स्टील सिटी में रहने के बावजूद वे जड़ों से जुड़े हुए हैं। यह जुड़ाव उनके शुरुआती टेराकोटा और प्रस्तर शिल्पों में दिखाई देता है। अमरेश पर रजत कुमार घोष के टेराकोटा का, मदनलाल की तकनीक का और पी चन्द्रविनोद की बौद्धिक चेतना और सबसे महत्वपूर्ण अपने इर्द-गिर्द की लोक कलाओं का काफी प्रभाव पड़ा है। अमरेश ने शुरू में टेराकोटा में कई प्रयोग किए जिनमें सर्पीली रिंग शैली का उपयोग चर्चित रहा। उन्होंने शबीहों (पोर्ट्रेट्स) का सृजन उक्त शैली में किया। इसमें शबीहों का पूरा व्यक्तित्व जीवित हो उठता है। शबीहों में एक गति आ जाती है। टेराकोटा में बने शबीहों में *क्लासमेट, माई सीनियर, माई फ्रेण्ड, मोंक* और *पाइपर* को काफी प्रशंसा मिली। एक शबीह को अखिल भारतीय पुरस्कार भी मिला। उक्त पुरस्कार की चयन समिति में के एस कुलकर्णी भी एक थे। उन्होंने अमरेश को इस दिशा में प्रेरित किया। अमरेश ने टेराकोटा में कुछ अन्य प्रयोगात्मक सृजन भी किए। खासकर अमूर्त स्वरूप में टेराकोटा को कैसे रोचक बनाया जा सके, क्योंकि टेराकोटा में अमूर्तन दुर्लभ कार्य था पर इनके गाइड श्री पाण्डेय ने उसे एक्सीडेण्टल मानते हुए मना किया। तत्पश्चात् अमरेश ने परिवार और बैण्डपार्टी पर भी टेराकोटा में शृंखलाएं बनायीं जिसमें 'अर्नामेन्टल' से अमरेश क्रमश: मुक्त होते गए हैं और कण्टूर लाइन को प्रमुखता देना शुरू किया। फलत: